ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-11, No.01, November: 2024

स्वेत रंग के स्याह विचार

सदानन्द लक्ष्मी, सहायक प्रोफेसर, सहायक प्रोफेसर महाराजा अग्रसेन महाविद्यालय
मोतीलाल नेहरू महाविद्यालय दिल्ली विश्वविद्यालयदिल्ली विश्वविद्यलय, Jnulaxmi2007@gmail.com

शोध सार :प्रवासी भारतीयों के साथ-साथ अन्य देशों के प्रवासियों की कथाएं नस्ल, रंग, भाषा, संस्कृति, धर्म आधारित भेदभाव होने की पीड़ा को अभिव्यक्त करती हुई कथाएं कहीं-न-कहीं स्वयं को आधुनिक और वैज्ञानिक आविष्कारों में उच्च स्तर पर होने के साथ मानसिक रूप से पिछड़े हुए साबित होते है। क्षेत्र, राज्य, भाषा के आधार पर आज भी लगभग सभी देशों में भेदभाव होने और उसके प्रतिरोध की खबरें सुनाई देती है।
बीज शब्द :नस्ल, नस्लवाद, प्रवासी, भेदभाव, पीड़ा, प्रतीरोध।

शोध आलेख

'तेजस्वी सम्मान खोजते नहीं गोत्र बतला के,पाते हैं जग में प्रशस्ति अपना करतब दिखला के' रामधारी सिंह 'दिनकर' की ये पंक्ति उस असहाय मानव की पीड़ा को दर्शाता है जो अपने जीवन में कर्म को मानवीय धर्म के रूप में स्थापित करने का प्रयास करता है। वह मानता है की व्यक्ति द्वारा किए गए कर्म ही उसके भविष्य की दिशा का निर्धारण करेंगे। वैश्विक स्तर की बात करें तो अलग-अलग देशों की अपनी भौगोलिक स्थिति और संस्कृति का प्रभाव दिखाई पड़ता है, जिसमें जाति, धर्म,रंग, रूप, नस्ल, नृजातीयता आदि मापदंड शामिल होते है। हिन्दी कथा साहित्य में अनेक प्रकार के सामाजिक भेदभाव को केंद्र में रखकर अनेक रचनाएं लिखी गई। जिनमें भारतीय समाज में व्याप्त विसंगतियों को स्थान दिया गया, जिसके कारण व्यक्ति-व्यक्ति में विभिन्न स्तरों पर भेदभाव किया जाता है।

अपनी मातृभूमि भारत से दूर किसी अन्य देश में स्थाई या अस्थाई रूप से निवास औरअपने सपनों को साकार करने की उम्मीद से लाखों भारतीय प्रवास करते है। वह अपनी उम्मीदों के साथ विदेशी समाज में प्रवासी समाज से जुड़ी हुई विभिन्न चुनौतियों से अनभिज्ञ रहते है। इन संघर्षों और भेदभाव को लगभग सभी प्रवासी कथाकारों ने अपनी रचनाओं में स्थान दिया है। उसी क्रम में प्रवासी कथाकार 'हरजीत अटवाल' ने अपने कथा साहित्य में प्रवासी जीवन की चुनौतियों में से एक 'नस्लवाद' जो की विभिन्न स्तर पर भेदभाव का एक माध्यम बना हुआ है, जिसे हरजीत अटवाल ने बड़ी सूक्ष्मता से चित्रित किया है।

'नस्लवाद' का अर्थ ऐसी धारणा से है, जिसमे यह मान लिया जाता है कि प्रत्येक नस्ल के लोगों में कुछ विशेष खूबियां होती हैं, जो उसे दूसरी अन्य नस्लों से कमतर या बेहतर बनाती है। नस्लवाद आमलोगों के बीच जैविक अंतर की सामाजिक धारणाओं पर आधारित भेदभाव और पूर्वाग्रह दोनों होते हैं। और इस शब्द का व्यवहार राजनीतिक,आर्थिक,सामाजिक व कानूनी प्रणालियों में भी देखने व सुनने को मिलते है जो इसके आधार पर भेदभाव तथाशिक्षा, धन, कार्य,स्वास्थ्य तथा नागरिक अधिकारों के संदर्भ में नस्लीय असमानता को बढ़ावा देते हैं।मनुष्य में रंग के आधार पर नस्लवाद को व्याख्यायित करते हुए पंजाबी आलोचक डॉ केवल सिंह परवाना लिखते है "वर्तमान में तीन प्रमुख नस्लें ही विश्व-भर में उपलब्ध हैं, इनमें से गोरे स्वयं को सर्वोत्तम नस्ल समझते हैं और दुनिया के जिस देश में भी ये बसे हुए हैं, वहाँ इनका प्रभुत्व है। शेष नस्लों काले (नीग्रो) और पीले-भूरे लोगों को ये अपने से घटिया समझते हैं और नफ़रत करते हैं, भेदभाव करते हैं, अन्याय और अत्याचार करते हैं, यही नस्लवाद है"[1] नस्लीय भेदभाव प्रवासी समाज के जीवन और विदेशी धरती पर रह रहा प्रत्येक व्यक्ति अनुभवकरता है।ब्रिटेन के साथ ही अमेरिका जो विश्व में मानवता और मानव अधिकारों का अगुआ होने का दंभ भरता हुआ दिखाई देता है, कानून व्यवस्था के संदर्भ में आलोचक डॉ. रामविलास शर्मा लिखते हैं, "नस्लवाद अमरीकी लोकतंत्र की विशेषता है.. मजे की बात यह है कि नशीली चीजों का इस्तेमाल करने वाले गोरों और कालों का प्रतिशत एक ही है लेकिन पुलिस जितने गोरों को पकड़ती है, उनसे पाँच गुना ज्यादा कालों को पकड़ती है। इस नस्लवाद से आक्रामक विदेश नीति जुड़ी हुई है।"[2]वर्तमान में इक्कीसवीं सदी की घटनाओं की

Copyright @ 2024 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-11, No.01, November: 2024

बात करें तो अमेरिका, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया जैसे कई विकसित देशों में बहुतायत नस्लीय भेदभाव की घटनाएं देखी जा रही हैं जैसेअमेरिका में जॉर्ज फ्लायड, ब्रियोना टेलर, एलिजा मैक्लेन, जियोना जॉनसन जैसे अश्वेत लोगों को अमेरिकी पुलिस की बर्बरता की वजह से मौत हुई।

भारतीय प्रवासी समुदाय को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नस्लभेदी व्यवहार का सामना करना पड़ता है। हरजीत अटवाल के उपन्यास में अंग्रेज पात्रों द्वारा महाराजा दलीप सिंह के लिए 'ब्लैक प्रिंस' व 'सांप' जैसे नस्लीय टिप्पणी से संबोधित करते है। दलीप सिंह की शक्ति को कुचलने के लिए लॉर्ड मोलोय अपने अंग्रेज मित्रों से कहता है, "लॉर्ड एंड फ्रेंडज़, फ़िक्र न करो, गोल्डन जुबली अभी दूर है, तब तक इस साँप को टोकरी में डाल लिया जाएगा या इसके फन को कुचल दिया जाएगा, हमें अपनी ताक़त पर भरोसा रखना चाहिए।"[3]'वन वे' उपन्यास में अपनी अवस्था को अभिव्यक्त करते हुए एक गौण पात्र कहता है, "हम पैसे की खातिर सेकेंड क्लास सिटीजन बनकर रह गए हैं। ये गोरे तो हमें आदमी ही नहीं समझते, दूर से देखकर ही थूकने लगते हैं।"[4]

'काला लहू'कहानी में एक प्रवासी भारतीय रक्तदान करने के बाद आत्मिक संतुष्टि अनुभव करता है और नर्स से पुनःमिलने पर वह उसे रक्तदान पत्र कोहर्ष से दिखाते हुए बताता है कि उसका रक्त भी 'ओ पॉज़िटिव'है, जो अनेक लोगों की जान बचाने में काम आ सकता है। इस पर वह आयरिश नर्स उसके रक्त को फ़िजूल कहते हुए उससे कहती है, "क्योंकि थर्ड वर्ल्ड के लोगों का खून यहाँ मानव शरीर के लिए प्रयोग नहीं किया जाता.... यूरोप के किसी भी मुल्क में प्रयोग नहीं करते।"[5]जब प्रवासी भारतीय पुरुष इसका कारण पूछता है तो वह प्रत्युत्तर में कहती है, "क्योंकि कहते हैं कि इसमें कई किस्म की बीमारियों होती हैं।"[6]उससे ऐसा उत्तर सुनकर उसके मन में दान दिए रक्त के भावी प्रयोग के सम्बन्ध में प्रश्न उठते हैं और जब वह उससे इस संदर्भ में प्रश्न पूछता है तो वह कहती है, "कभी-कभार दवाइयों या कुछ और बना लेते हैं या फिर बहा देते हैं।"[7]उस नर्स का ऐसा उत्तर सुनकर वह रक्तदान से सम्बन्धित पत्र को मसलकर कूड़ेदान में फेंक देता है, क्योंकि उसे ऐसा प्रतीत होता है कि उसके रंग के कारण उसके रक्त को भी काला घोषित करते हुए उसमें बीमारियों के होने का फैसला सुना दिया गया हो, जो कि नस्लवाद की भावना से प्रेरित है।

'फ़र्क'कहानी में लेखक ने नस्लवाद के जटिल स्वरूप को प्रस्तुत किया है, जिसमें मंगल सिंह नामक पात्र इंग्लैंड में रहते हुए खुद से होने वाले नस्लभेदी व्यवहार का विरोध करता है, वहीं पंजाब लौटने पर उत्तर प्रदेश, बिहार से आये प्रवासियों मजदूरों पर नस्लीय टिप्पणियाँ करता है। कहानी में वह अंग्रेज़ों के पड़ोस में रहने के कारण उनके नस्लीय भेदभाव व टिप्पणियों से भीतर तक आहत दिखाई देता है और स्थानीय भारतीय समुदाय की मदद लेकर उन्हें सबक सिखाने की बात करते हुए कहता है, "पर मुसीबत साली यहीं कम नहीं हुई.. एक दिन किसी ने हमारी वैन पंक्चर कर दी... मैंने भी रोड पर खड़े होकर अंग्रेज़ी में गालियों की बौछार कर दी... आज साले चार-पाँच लोगों ने आकर वैन से निकलते हुए घेर लिया..... और कहते कि तुम पाकियों को रहने की अक्ल नहीं.... हमारी कंट्री खराब कर रहे हो.... और हमारी नौकरियों संभालकर बैठे हो और हमें चैन से रहने भी नहीं देते... जब मैंने आगे से सुनाई तो गालियों पर उत्तर आए, ब्लैक बास्टर्ड कहा... तब तो मैंने मौका संभाल लिया, मैं सोचता हूँ कि अब नहीं छोड़ना, छठी का दूध न याद करवा दिया तो मुझे मंगल सिंह कौन कहेगा।"[8]लेकिन उसकी पंजाब-यात्रा से लौटने के पश्चात् उसका समय तक वहाँ ठहरने का कारण पूछता है तो वह पंजाब में मज़दूरी करने आये प्रवासी मजदूरों की बीमारी की संज्ञा देते हुए इसका मूल कारण बताता है। लेकिन जब उसका भतीजा उसके कहने का आशय समझ नहीं पाता तोवह कहता है, "ये भइये साले... यू. पी. सी. पी. से आकर अपने गाँवों में गंदगी फैला रहे हैं आजकल,... जिधर देखो भइये ही भइये,.... कई तो परिवारों के साथ आकर बैठे हैं, एक तो पंजाबी मज़दूरों की कद्र कम कर दी, दूसरा साले वहाँ अपने घर बनाकर बैठे हैं...।"[9]इस प्रकार लेखक ने मंगल सिंह नामक पात्र के माध्यम से भारतीयों के दोहरे चरित्र को उभारा है, जो विदेश प्रवास के दौरान हुए नस्लीय व्यवहार को अनुचित ठहराते हुए अत्यंत पीड़ा अनुभव करता है तो वहीं पंजाब आकर उत्तर प्रदेश, बिहार से आये प्रवासी मजदूरों के लिए नस्लीय शब्दों का प्रयोग करते हुए आत्मिक संतुष्टि अनुभव करता है।

Copyright @ 2024 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-11, No.01, November: 2024

नई पीढ़ी की अपेक्षा पुरानी पीढ़ी ने नस्लवाद के दंश को भीतर तक झेला है।जो ऐसे अमानवीय व्यवहार के विरुद्ध अपना विरोध तक दर्ज नहीं करवा पाई। विदेश में अल्पसंख्यक होने के कारण नस्लवाद का सीधा विरोध करने की अपेक्षा उसे सह जाने में ही भलाई समझते थे। परिणामतः उन्हें उच्च पद की नौकरियों से दूर रखा जाता था तो वहीं पदोन्नतियाँ भी सबसे अंत में दी जाती थीं। 'ब्रिटिश बॉर्न देसी'उपन्यास में प्रणब पटेल नामक पात्र अमर को इसी अनुभव को बताते हुए कहता है, "यंग मैन, हमने बहुत मुश्किल वक़्त देखा है, जब मैंने जॉब शुरू की तो मैं अकेला था, मुझे इतने नस्लवाद का सामना करना पड़ा कि पूछो न, मेरी प्रमोशन भी सब से आखिर में हुई, मुझसे बहुत जूनियर मेरे अफ़सर बन गये। तब तो ये रेशियल इक्युएलिटी एक्ट भी नहीं था, अब तो इस दफ्तर में हम काफ़ी गिनती में हैं, अपना काम थोड़ा ध्यान से करो, सब ठीक हो जाएगा, शायद साल की बजाए डेढ़ साल लग जाएगा।"[10] विदेश के शिक्षण संस्थानों में भी नस्लवाद व्यापक रूप से देखा जा सकता है। 'वन वे'उपन्यास में सुरजन सिंह की बेटियों के स्कूल जाने पर उन्हें नस्लभेदी शब्दों व इशारों का सामना करना पड़ता है। उपन्यासकार इस सम्पूर्ण स्थिति के संदर्भ में लिखते हैं, "बेगानी भाषा के साथ-साथ उन्हें कई बार भद्दे मज़ाक भी सहने पड़ते। गोरे बच्चे उन पर हँसते, छेड़ते और नस्लवादी गालियों भी निकालते, जो उन्होंने अपने बड़ों से सीखी होतीं। इन लड़कियों को बहुत देर तक तो दूसरे बच्चों की अच्छी-बुरी हरकतें ही समझ न आई। उंगलियों दिखाकर किए गए इशारे उन्हें समझ न आते। वे भी हँस देती, परन्तु जब समझ आने लगे तो उनकी नसों में भी कसाब आने लगा"[11] कई स्कूली बच्चों को स्कूल आते-जाते समय नस्लवादी लोग अपने नस्लभेदी व्यवहार से परेशान करते हैं। 'गीत'उपन्यास में विजय नामक पात्र के पुत्र को भी नस्लवाद का सामना करना पड़ता है, जिसका ज्ञान होने पर विजय अत्यंत विचलित होते हुए दिखाई देता है। उपन्यासकार इस सम्बन्ध में लिखते हैं, "एक नई सिरदर्दी और उसके सामने आकर बड़ी हो जाती है। रोहन को स्कूल आते-जाते समय कुछ नस्लवादी गोरे लड़के बुली करने लगते हैं। विजय अपने साथ कोई भी ज्यादती सह सकता है, परन्तु अपने बच्चों के साथ नहीं।"[12] प्रवासी समाज के बच्चों को अन्य देशों में शिक्षार्जन में शिक्षण प्रणाली के स्तर पर तथा परिवेश, नस्लवाद, भाषागत भिन्नता, सांस्कृतिक स्तर पर भिन्नता आदि अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिसके परिणामस्वरूप प्रवासी बच्चे वहाँ के स्थानीय बच्चों से अलग-थलग रहते हुए दिखाई देते हैं। तेजेन्द्रशर्मा की कहानी 'छूता फिसलता जीवन' में मैंडी और दारजी घंटों तक पुलिस स्टेशन में बैठे रहने के बावजूद भी जब उनकी रिपोर्ट नहीं लिखी जाती है तब दारजी अंग्रेज़ी में चिल्ला पड़तें हैं कि "ऑफिसर, तुम्हें इस तरह हमारी बेइज़्ज़ती करने का कोई अधिकार नहीं। हम भी इस देश के टैक्स आदा करनेवाले बाइज़्ज़त शहरी हैं। मैं भी काउंसिल में ऊँचे पद पर काम करता हूँ। मुझे आपकी रिपोर्ट आपके ऊँचे अधिकारी से करनी पड़ेगी। आपका यह रेसिस्ट एटिट्यूड ही पुलिस की बदनामी का बायस है।"[13] इस प्रकार तेजेन्द्र शर्मा ने अपनी कहानियों में रंग भेदभाव के कारण उत्पन्न समस्याओं को उजागर किया है।

अमेरिका जैसे आर्थिक रूप से विकसित देश में अफ्रीकियों तथा काली त्वचा के लोगों के साथ हो रहे भेदभाव के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को बयान करते हुए 'सुषम बेदी' अपनी कहानी 'एक अधूरी कहानी'में लिखती हैं कि "वे उनके लिए इनसान नहीं खेत में जुतने वाले जानवर थे, या बोझा ढोने वाले गधे थे। न तो उनको इन दासों में कोई मानवीयता दिखती थी, न ही वे इनमें कोई महसूस करने या सोच पाने का सामर्थ्य देखते थे। अमेरिका का यह काला इतिहास उसके वर्तमान पर अकसर हावी हो जाता है। गोरा उसे बराबर का हकदार मान ही नहीं पाता, चाहे कानून कितना भी कालों के साथ हो।"[14]यहाँ नस्लभेद का जो रूप दिखाई पड़ता है उसकी नींव जन्मजात है। जब व्यक्ति को बचपन से यह सिखाया जाता हो कि उनका गोरापन श्रेष्ठतम नस्ल के होने का प्रमाण है, तब वर्तमान में बेशक कानून ऐसे भेदभाव को अपराध की श्रेणी में रखता हो तथा उसके लिए दंड का प्रावधान भी हो लेकिन इससे निजात पाना आसान नहीं लगता। इक्कीसवीं सदी में नस्लवाद का स्वरूप अत्यंत जटिल व अप्रकट हो चला है, जिसके कारण भेदभाव, आक्रामकता व अपमान की संरचनात्मक सूक्ष्मता में भी वृद्धि हुई है।अमेरिका जैसे आर्थिक रूप से विकसित देश भी एस समस्या से अछूते नहींन रह पाए। कई समाजशास्त्री विशेषज्ञों का भी मानना है कि, पक्षपातपूर्ण व्यवहार व भेदभावपूर्ण कार्य सामाजिक असमानता को अधिक बढ़ावा देतें है। जिसका उल्लेख 'द लांसेट' में प्रकाशित एक अध्ययन में भी किया गया है।

Copyright @ 2024 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-11, No.01, November: 2024

1. डॉ केवल सिंह परवाना, बदेशी पंजाबी साहित: नस्लवादी परीपेख, सुंदर बुक प्रकाशक, 2018, पृ. स. 39
2. रामविलास शर्मा, भारतीय संस्कृति और हिन्दी-प्रदेश(भाग-दो),किताबघर प्रकाशन, 2018, पृ. स. 749
3. हरजीत अटवाल, आपणा, संगम पब्लिकेशन, 2015, पृ.स. 181
4. हरजीत अटवाल, वन-वे , संगम पब्लिकेशन, 2012, पृ.स. 21
5. हरजीत अटवाल, काला लहू , संगम पब्लिकेशन, 2012, पृ.स. 29
6. वहीं
7. वहीं
8. हरजीत अटवाल, दस दरवाज़े (अनुवादक : सुभाष नीरव) दिल्ली,2016, पृ. सं. 100
9. वहीं पृ. स. 102
10. हरजीतअटवाल, ब्रिटिश बॉनदेसी, संगम पब्लिकेशन, 2011, पृ. सं. 08
11. वहीं पृ. स. 78-79
12. वहीं पृ. स. 82-83
13. कब्र का मुनाफा, तेजेन्द्र शर्मा, पृ.स. 114
14. सुषम बेदी, सड़क की लय, ज्ञान विज्ञान एजुकेयर, 2017, पृ.स. 11

Copyright @ 2024 Author